एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2008

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *10×2=20*

(क) साधो, देखो जग बौराना

साँची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना ।

हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।

आपस में दोऊ लड़े मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना ।

बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना ।

आतम-छोडि पषानै पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना ।

आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।

(ख) सँदेसो देवकी सों कहियो ।

हौं तो धाय तिहारे सुत की कृपा करत ही रहियो ॥
उबटन तेल और तातो जल देखत ही भजि जाते ।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती करम करम करि न्हाते ॥
तुम तो टेव जानतिहि ह्वै है तऊ मोहिं कहि आवै ।
प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतेहि माखन रोटी भावै ॥
अब यह सूर मोहि निसिबासर बड़ों रहत जिय सोच ।
अब मेरे अलक लड़ैते लालन ह्वै है करत संकोच ॥

(ग) माई साँवरे रंग राची ।

साज सिंगार बाँध पग घूंघर, लोकलाज तज नाची ।
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सँगत श्याम प्रीत जग साँची ।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची ।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बातां काँची ।
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची ॥

(घ) पत्रा हीं तिथि पाइयै, बा घर कैं चहुँ पास ।
नितप्रति पून्यौई रहै, आनन ओप उजास ॥
बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ ।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहैं, नटि जाइ ॥

2. रासो काव्य परम्परा में 'पृथ्वीराज रासो' का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए । *10*

3. विद्यापति पदावली में वर्णित भक्ति और शृंगार के स्वरूप पर प्रकाश डालिए । *10*

4. कबीर की व्यंग्य दृष्टि और भाषा सामर्थ्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । *10*

5. 'पद्मावत' में निहित लोकतत्त्व का परिचय दीजिए । *10*

6. सूरदास के वात्सल्य वर्णन का विवेचन कीजिए । *10*

7. तुलसी की कविता में शिक्षित जीवन के मर्मस्पर्शी प्रसंगों का मूल्यांकन कीजिए । *10*

8. बिहारी की कविता में चित्रित संयोग शृंगार का विश्लेषण कीजिए । *10*